Vol. 12, No.1 (January 2023) pp. 148-153 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

संगीत रत्नाकर में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त 'वाद्य' शब्द की व्याख्या

कीर्ति महेन्द्र शोधार्थी (तबला) संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश Email: keertimahendra@gmail.com	प्रो. रेनू जौहरी शोध निर्देशिका,आचार्या (तबला) संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सारांश

मध्यकालीन सांगीतिक ग्रंथों में संगीत रत्नाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसकी रचना शारंगदेव द्वारा १३वीं शताब्दी में की गई है. यह ग्रंथ सात अध्यायों में विभक्त हैं. इसके छठे अध्याय वाद्याध्याय में वाद्यों का विधिवत् वर्णन किया और वाद्यों को केवल बजाने वाले यन्त्र विशेष रूप में में ही नहीं वरन् अलग - अलग स्थानों पर अलग अलग अर्थों से प्रयोग में लाए। जैसा कि वर्तमान काल में वाद्य का तात्पर्य उन यंत्रों से ली जाती हैं जिनमें सांगीतिक ध्वनियां निकाला संभव हो, वैसे ही शारंग देव ने वाद्य को तीन अलग अर्थों में प्रयोग किया जिसमे उन्होंने बजने वाला, उन यंत्रों पर बजने वाली रचनाएं को वाद्य तथा वाद्यों पर बजने वाले प्रबंध को वाद्य प्रबंध शब्द से ही संबोधित किया है. शोध प्रपत्र के विषय के लिए वाद्याध्याय के चार प्रकार के वाद्य यंत्र, सुषिर व अवनद्ध वाद्यों की रचनाओं (वाद्यों) को, तथा उनके वाद्य प्रबंध को लिया है.

मुख्य शब्द - संगीत रत्नाकर, वाद्य, पटह, हस्तपाट, अवनद्ध वाद्य

अध्ययन की विधि- प्रस्तुत शोध प्रपत्र में वर्णनात्मक और विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है.

साहित्यावलोकन- पार्श्वदेव कृत संगीत समयसार , संपादक एवं अनुवादक आचार्य बृहस्पति, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ , प्रथम संस्करण 2006

शारंगदेव कृत संगीतरत्नाकर, तृतीय खण्ड व्याख्या एवं अनुवादक सुभद्रा चौधरी, राधा पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2006, इस खण्ड में तालों व वाद्यों का विस्तृत विवेचन है. जिसमें वाद्यों की पूर्ण वादन सामग्री व संरचना दी गयी है.

'ग्रन्थ सारामृत', लेखिका- प्रो. रेनू जौहरी, कनिष्क पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2019 इस पुस्तक में सभी ग्रन्थों में दिए गए ताल वाद्यों के तत्वों का निर्देशन किया गया है.

सफल प्रश्नोत्तरी, लेखिका- प्रो. रेनू जौहरी, नॉटनल (ऑनलाइन) पब्लिकेशन, 2021

शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर मध्यकाल का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है. इस ग्रंथ में शारंगदेव ने संगीत की विविध शैलियों, वाद्यों, संगीत संबंधित तथ्यों का विस्तृत वर्णन छठे अध्याय में किया है . संगीत रत्नाकर का छठा अध्याय वाद्याध्याय है जिसमें वाद्यों की विस्तृत चर्चा की गई है . रत्नाकर में प्रयुक्त वाद्य शब्द की व्याख्या करने से पूर्व सामान्य भाषा में वाद्य शब्द का अर्थ व उत्पत्ति के बारे में समझना जरूरी है -

"वाद्य शब्द का शाब्दिक अर्थ है वदनीय या बजाने योग्य विशेष यंत्र. वाद्य शब्द 'वद'(भ्वादिगण 1009, चुरादिगण 1842 वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीस्थ) धातु से निष्पन्न होता है जो 'व्यक्तायांवाचि' या इस स्पष्टोच्चारण करने के अर्थ में व्यवहृत होता है. 'वदतीति वाद्यम्', जो बजता है वही वस्तुतः वाद्य है"[1]. यदि हम ध्यान पूर्वक सुने तो वाद्य में हमें स्वरों और उनमे बंधे शब्दों या पाट वर्णों का स्पष्ट उच्चारण सुनाई भी देता है. विस्तृत अर्थ में किसी भी साहित्यिक ध्वनि उत्पादक वस्तु को वाद्य की संज्ञा दी जा सकती है. संकुचित अर्थ में वाद्य का तात्पर्य मानव निर्मित वाद्य से होता है जो संगीत उपयोगी स्वरों का सृजन करने में सक्षम हो.

हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य में वाद्य के लिए तीन पर्याय मिलते हैं 1. वाद्य, 2. वादित्र, 3. आतोद्य. 'वद' धातु में 'यत्' और 'णित्रन्' प्रत्यय लगाने से क्रमशः वाद्य और वादित्र शब्द बनते हैं.

लालमणि मिश्र के अनुसार- "संगीतात्मक ध्वनि तथा गति को प्रकट करने के उपकरण को वाद्य कहते हैं. इसी दृष्टि से प्राचीन काल में मानव-कण्ठ भी वाद्य माना गया है. किन्तु कण्ठ-वाद्य ईश्वर निर्मित है, अतएव मनीषियों ने मनुष्य निर्मित वाद्यों का ही अध्ययन, मनन व वर्णन किया है".[2] डॉ० योगमाया शुक्ल के अनुसार- "स्वर-ताल अभिव्यक्त करने वाले उपकरण भारतीय संगीत में 'वाद्य' कहे जाते हैं."[3] डॉ० वी० बालाजी 'वाद्य को कोई उपकरण या यन्त्र की संज्ञा न प्रदान करते हुए सांगीतिक ध्वनि का माध्यम मानकर वाद्य की परिभाषा इस प्रकार स्पष्ट करते हैं-"मानव-कण्ठ के अलावा शरीर के विभिन्न अंगों जैसे हाथ की अँगुलियों, पंजों, नखों भुजा व मुख से फूँक इत्यादि के द्वारा जिस 'माध्यम' से कर्णप्रिय रंजक तथा सांगीतिक ध्वनि व्युत्पन्न होती है, उस 'माध्यम' को सांगीतिक भाषा में 'वाद्य' कहते हैं."[4] 'वाद्य' शब्द 'वद्' धातु से बना है और इसका अर्थ है ''जिससे बुलवाया जा सके'' अर्थात् मनुष्य स्वयं अपने शरीर से नाद उत्पन्न न करके जिस यंत्र में से नाद उत्पन्न कर सकता है, यानि जिसे बुलवा सकता है, वह है -''वाद्य''[5]

सभी विद्वानों ने वाद्य शब्द का अर्थ बजने वाले यंत्र के लिए प्रयुक्त किया है परंतु संगीत रत्नाकर में वाद्य शब्द को भिन्न- भिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया गया है . संगीत रत्नाकर में वाद्याध्याय के पदार्थ संग्रह के सन्दर्भ में दिए श्लोक में पाटों से उत्पन्न होने वाले वाद्य, वाद्यों के आश्रय में वाद्य प्रबन्ध, और मर्दल वाद्य के बारे में कहा गया है.

पाटप्रभववाद्यानि प्रबन्धान् वाद्यसंश्रयान्।
मर्दलाख्यं ततो वाद्यं भेदान् मार्दलिकस्य च ॥ 25॥[6]

अर्थात् वाद्य के तीन अलग- अलग अर्थ स्पष्ट होते है-1. वह यंत्र जो बजाए जाते हैं और जिनमें संगीत उपयोगी ध्वनि उत्पन्न होती है. 2. वाद्यों पर बनाई जाने वाली विशिष्ट रचना के संबंध में. 3. निबद्ध रचनाओं के संयोग से बनने वाले प्रबंधों के संबंध में वाद्य शब्द का प्रयोग 'वाद्य प्रबंध' के रूप में प्रयोग किया गया.

1. 'वाद्य' यंत्रों के संबंध में- संगीत रत्नाकर में छठे अध्याय वाद्याध्याय में वाद्यों के तीन मुख्य प्रयोजन बतलाते हुए उनके चार प्रकारों का उल्लेख किया है –

गीतं चतुर्विधाद् वाद्याज्जायते चोपरज्यते।
मीयते च ततोऽस्माभिर्वाद्यमत्र निगद्यते ॥ 3 ॥[7]
तत् ततं सुषिरं चावनद्धं घनमिति स्मृतम्।
चतुर्धा तत्र पूर्वाभ्यां श्रुत्यादिद्वारतो भवेत् ॥ 4॥[8]

अर्थात् तत्, सुषिर, घन, अवनद्ध चार प्रकार के वाद्यों को बताया है इसके अतिरिक्त वाद्यों के प्रयोजन के विषय में इस प्रकार कहा है –

वाद्य, 1. गीतों के स्वर उच्चारण हेतु, 2. गीत का उपरंजन करने हेतु, 3. गीत के काल का मापन करने हेतु प्रयोग किए जाते हैं. इसके अतिरिक्त सभी प्रकार के वाद्यों के लक्षण का उल्लेख करते हुए विविध प्रकार के तत्, सुषिर, घन, अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख किया गया है.

2 . **'वाद्य' विशिष्ट रचनाओं के संबंध में-** शारंगदेव ने हस्तपाटों के संयोग से बनने वाली वादन सामग्री (रचनाओं) को भी वाद्य कहा है जिस प्रकार नाट्यशास्त्र में वाद्यों पर बजने वाले वर्णों को अक्षर कहा है उसी प्रकार संगीत रत्नाकर में वर्णों को पाट कहा गया है व विभिन्न पाटों के संयोग को हस्तव्यापार में बताया है. पाटों के संयोग से निर्मित रचनाओं को वाद्य कहा गया है.

पाटविन्यासभेदाः स्युर्वाद्यानि पटहादिषु ॥ 900 ॥[9]

अर्थात् पटह आदि वाद्यों में हस्त पाटों के सन्निवेशों के प्रकार को वाद्य कहते है .

इस श्लोक से यह स्पष्ट होता है कि पाटों के सहयोग से बनी रचनाओं को वाद्य कहा गया.

तत् वाद्य में एकतंत्री वीणा के हस्त व्यापार संग्रह में दोनों हाथों की क्रियाओं द्वारा अलग-अलग हस्त पाट बताएं हैं जिसमें दाहिने हाथ से 9, बाएं से 2 और दोनों हाथों से संयुक्त रूप से क्रिया करने पर 13 हैं जो कुल मिलाकर 24 हस्तपाट है इन 24 हस्तपाटों से 10 प्रकार के वाद्य अर्थात् रचनाओं का उल्लेख है.

छन्दो धारा कैकुटी च कङ्कालं वस्तु च द्रुतम्।
गजलीलं दण्डकं चोपरिवाद्यमतः परम् ॥ 89 ॥
वाद्यं पक्षिरुतं चेति दशधा परिकीर्तितम्।[10]

अर्थात् छन्द, धारा, कैकुटी, कंकाल, वस्तु, द्रुत, गजलील, दण्डक, उपरिवाद्य और पक्षिरुत दस प्रकार के 'वाद्य' है. उक्त (रचनाएँ) वाद्य तत श्रेणी के वाद्यों से सम्बंधित है.

इसके अतिरिक्त तंत्री वाद्य से उत्पन्न होने वाली ध्वनि के गुण के आधार पर भी वाद्य बताये गये हैं –

सकलं निष्कलं चेति द्विविधं वाद्यमुच्यते।[11]

अर्थात् सकल और निष्कल दो तरह के अन्य वाद्य (रचनाएँ) भी बताये गये हैं.

इसी प्रकार अवनद्ध वाद्य में 23 अवनद्ध वाद्य बताए गए जिनमें प्रमुख रूप से पटह और हुडक्का का वर्णन है जिसको 88 हस्त पाटों के संयोग से बना बताया गया हैं.

पटह में वाद्यों की संख्या 12 व हुडक्का के वाद्यों की संख्या 13 दोनों मिलाकर कुल वाद्य 25 बनते हैं.

पटह के वाद्य- संगीत रत्नाकर में पटह के 12 वाद्यों के नामों का उल्लेख इस प्रकार से किया गया है-

"वोल्लावाणी च चल्लावण्युडुवश्च कुचुम्बिणी।
चारूश्रवणिकालग्नः परिश्रवणिका ततः ॥ 901॥
समप्रहारः कुडुवचारणा करचारणा।
दण्डहस्तो घनरवस्तानीती द्वादशवदन्"॥902॥[12]

अर्थात् वोल्लावाणी, चल्लावणी, उडुव, कुचुम्बिणी, चारूश्रवणिका, अलग्न, परिश्रवणिका, समप्रहार, कुडुवचारणा, करचारणा, दण्डहस्त व घनरव ये बारह वाद्य है.

हुडक्का के वाद्य- शारंगदेव ने हुडक्का के 13 वाद्यों का नामोल्लेख इस प्रकार से किया है-

"वल्लिश्च वल्लिपाटः स्यात् घत्ताभेदौ झडप्पणी।
अनुश्रवणिका हस्तो जोडणी त्रिगुणा ततः ॥ 903 ॥
पञ्चहस्तः पञ्चपाणिर्वाद्यं स्यात् पञ्चकर्तरी।
ततश्चन्द्रकला प्राहुर्वाद्यानीति त्रयोदश ॥ 904 ॥
प्रायेणैतानि दृश्यन्ते हुडुक्कावाद्यगोचरे।
वाद्यानामुभयेषां स्यात् पञ्चविंशतिरित्यसौ" ॥ 905 ॥[13]

इसके अतिरिक्त वाद्य प्रबंध शब्द का प्रयोग भी संगीत रत्नाकर के वाद्याध्याय में देखने को मिलता है. 25 वाद्यों के संयोग से बनने वाले वाद्य प्रबंध का वर्णन संगीत रत्नाकर में किया है-

यतिरोता च गजरो रिगोणी कवितं पदम् .

मेलापकश्चोपशमोद्ग्राहप्रहरणान्यथ ॥ 946 ॥

अवत्सकश्छण्डणश्च तुडुका मलपं ततः।

मलपाङ्गं च मलपपाटश्छेदोऽथ रूपकम् ॥ 947 ॥

अन्तरो ऽन्तरपाटश्च खोजः खण्डयतिस्ततः।

खण्डच्छेदोऽप्यवयतिः खण्डपाटश्च खण्डकः ॥ 948 ॥

खण्डहुल्लः समः पाटो ध्रुवको ऽङ्गाङ्गरूपके।

तालो वितालः खलकः समुदायश्च जोडणी ॥ 949 ॥

उडवस्तलपाटश्चोट्टवणी तुण्डकस्ततः।

अङ्गपाटश्च पैसारस्त्रिचत्वारिंशदित्यमी ॥ 950 ॥

उक्ताः श्रीकरणाग्रण्या प्रबन्धा वाद्यसंश्रयाः ।[14]

यति, ओता, गजर, रिगोणी, कवित, पद, मेलापक, उपशम, उद्ग्राह, प्रहरण, अवत्सक, छण्डक, तुडुका, मलप, मलपांग, मलपपाट, छेद, रूपक, अन्तर, अन्तरपाट, खोज, खण्डयति, खण्डच्छेद, अवयति, खण्डपाट, खण्डक, खण्डहुल्ल, सम, पाट, ध्रुवक, अंग, अंगरूपक, ताल, विताल, खलक, समुदाय, जोडणी, उडव, तलपाट, उट्टवणी, तुण्डक, अंगपाट , पैसार इस प्रकार ये तेतालीस वाद्यसंश्रित प्रबन्ध श्रीकरण-अग्र (शार्ङ्गदेव) के द्वारा कहे गये हैं.

इन वाद्य प्रबंध का तात्पर्य वाद्यों की निबद्ध रचनाओं से है जो कि हस्त पाटों से निर्मित 25 वाद्यों के संयोग से प्रबंध के धातुओं उदग्राह, मेलापक, ध्रुव और आभोग के आधार पर निर्मित की जाती है. 'कल्लिनाथ ने अवनद्ध वादकों के प्रचार में उदग्राह को लहरी, मेलापक को येडुपु, ध्रव को अंतर वैकल्पिक अंतर धातु को, उपान्तर और आभोग को मुक्तायी उचित लिखा है.'[15]

संगीत रत्नाकर के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 'वाद्य' शब्द का प्रयोग केवल वाद्य यंत्रों के लिए ही नहीं वरन् विशिष्ट चुनाव के लिए भी वाद्य शब्द प्रयोग में लाया गया, साथ ही परिवर्ती आचार्य पार्श्वदेव ने भी शारंगदेव की तरह वाद्य को वाद्य यन्त्रों व विशिष्ट बंदिशों के लिए प्रयुक्त किया. वस्तुतः शारंगदेव ने जहां चार प्रकार के वाद्य यंत्रों का वर्णन किया वही तत् वाद्य व अन्य वाद्य में हस्त पाट से निर्मित विशिष्ट रचनाओं को भी वाद्य शब्द से संबोधित किया.

सन्दर्भ:

[1] संगीत पत्रिका, वाद्य वादन अंक, पृष्ठ – 21
Sangeet Patrika, Vadya Vadan Ank, p.21

[2] मिश्र, लाल मणि. *भारतीय संगीत वाद्य*, नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ. द्वितीय संस्करण 2002, प्राक्कथन पृष्ठ -5
Mishra, Lalmani. Bhartiya Sangeet Vadya. New Delhi: Bhartiya Gyanpeeth, Dwitiya Sankararan 2002, p.5

[3] शुक्ल, योगमाया. *तबले का उद्गम ,विकास और वादन शैलियाँ*, पृष्ठ -22
Shukla, Yogmaya. Table ka Udgam, Vikas aur Vadan Shailiyan. P.22

[4] सरल, भीमसेन. *तबला संगत एवं कलाकार- स्थान, स्थिति और योगदान*, नई दिल्ली: कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, पृष्ठ -56
Saral, Bheemsen. Tabla Sangat Evam Kalakar – Sthan, Sthiti aur Yogdan, Nai Delhi: Kanishka Publishers Distributers, p. 56

[5] वर्मा, अमित कुमार. अंतर्मन का संगीत. नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स (2012). पृष्ठ -58
Verma, Amit Kumar. *Antarman ka Sangeet.* Nai Delhi: Kanishka Publishers Distributers, (2012) p. 58

[6] शारंगदेव कृत संगीतरत्नाकर, तृतीय खण्ड व्याख्या एवं अनुवादक सुभद्रा चौधरी, राधा पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2006, पृष्ठ-254
Sharangdev Krat Sangeet Ratnakar, Tritiya Khand, Vyakhya evam anuvadk- Subhadra Choudhary, Radha Publications, Pratham Sanskaran, 2006, p. 254.

[7] वही, पृष्ठ-248

[8] वही, पृष्ठ-249

[9] वही, पृष्ठ-472

[10] वही, पृष्ठ-272

[11] वही, पृष्ठ-275

[12] वही, पृष्ठ-472

[13] वही, पृष्ठ-472-73

[14] वही, पृष्ठ-484-85

[15] वही, पृष्ठ-484